भाव - लहरी

वी. एल. शर्मा

भाव - लहरी

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-27-2

Price: ₹ 239.00

The opinions/ contents of the book is political satire and individual opinions/ thoughts of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

भाव – लहरी

वी.एल.शर्मा

लेखक के बारे में

लिखने का शौक बचपन से रहा जो विरासत में मिला, पिता शायर थे, माँ को भी लिखने का शौक था! फिर समय के साथ बहते हुए भी लिखना जारी रहा! हृदय में भाव यदि उड़ते पक्षी को देखकर उठे, तो जीने के लिये जूझते लोगों को देखकर भी मचले! भाव, शब्द बने और शब्द, ''भाव-लहरी''

पहचान कुछ नहीं, ये शब्द ही पहचान है!

पुस्तक के बारे में

लिखने का शौक बचपन से था! पिता जी शायर थे, पत्रकार थे! माँ भी लिखती थी!

जीवन की उथल-पुथल, फिर पैसों की तंगी, विपरीत परिस्थितियाँ, परन्तु इनका लाभ मिला लेखन को, जो सत्य के और करीब लाया! हृदय के भाव, उड़ती चिड़िया, जीने को जूझते आम आदमी, प्रकृति सब देखते हुये प्रभावित होते रहे!

बेसहारा इंसान कितना मज़बूत होता है! अनेक आशाओं को, पलते सपनों को, अंत तक पाने की लालसा, सब भावों को शब्दों का रूप देते-देते **"भाव-लहरी"** बन गई.....!

यही पहचान है मेरी - मेरे शब्द!

''सरल कवित कीरति विमल सोइ आदरहिं सुजान!
सहज बयर बिसराई रिपु जो सुनि करहिं बखान!!''

– महाकवि तुलसीदास

दो शब्द

"भाव - लहरी" - में शब्दों ने कविता का रूप लेते हुये जीवन से जुड़ी अभिव्यक्तियों को अनेक रूपों में प्रकट किया है।

मन में उठते भाव, अपने आस-पास के सत्य में कल्पना लिये जीवन के सुख-दुःख, संघर्ष, प्रेम, समर्पण, त्याग, भक्ति, संवेदना, क्रोध, आदि का व्यवहार लिये प्रतीत होते हैं। इसमें अनेक कविताएँ पहले मेरी प्रकाशित "तुषारिका" से ली है, जो अनेक आँखों से ओझल रही! अन्य अप्रकाशित व नवीन हैं।

- वी.एल.शर्मा

ज़िन्दगी किस कद़र सिमट जाती है हमसे पूछिये,
हमने कई शहंशाहों के मज़ार देखें हैं!

आभार

मैं आभार प्रकट करती हूँ अपने माता-पिता का, जिन्होंने मुझे वह स्नेह, प्यार दिया, जो निःस्वार्थ था! उनसे देशप्रेम, व्यक्तिप्रेम, दया सीखी!

- इस देश का आभार है जहाँ मैंने जीवन बिताया, अपनी पहचान पाई!
- इस समाज का आभार है, जिसमें मुझे भाव मिले, भावों ने शब्द दिये!
- इस प्रकृति का, जिसने भावों को जन्म दिया!
- और आभार सबसे अधिक उस भगवान का, जिसने मुझे कभी हारने न दिया!

शुभकामनाएँ

मेरे साथ सदा से शुभकामनाएँ रहीं, आशीर्वाद के रूप में मेरे माता-पिता की, और उन मित्रों की जो मेरे सुख-दुःख में मेरे साथ रहे, तथा मेरे बच्चों की जो सदा मुझे प्रोत्साहित करते रहे!

समर्पित

समर्पित है मेरे देशवासियों, विश्ववासियों के
भावमय हृदयों को.....

कविता - सूची

क्र.	कविता	पृष्ठ क्र.
01	जगमग-जगमग ज्योति जल उठी	01
02	बना न उपवन यह संसार	02
03	साक्षात्कार	03
04	मैं आम आदमी	04
05	हाथ की रेखाएँ	05
06	देव गंगा	06
07	नवीनता	07
08	अहं ब्रह्मास्मि	08
09	सब्र का बाँध	09
10	भूख	10
11	आपदा	11
12	मीरा	12
13	यही सत्य है	13
14	हीरा	14
15	वृक्ष बनोगे	15
16	आराम का क्षण	16
17	बादलों पे लिखी कहानी	17
18	नाम	18
19	उपयुक्त समय	19
20	बर्फ से दबी चोटियाँ	20
21	सीमाएँ	21
22	घर	22
23	दो आत्माएँ	23
24	पथिक	24
25	बेबसी	25
26	शून्य	26
27	क्या लिखूँ ?	27
28	फिफ्टी डॉलर्स इन वन रूपैया	28
29	अमिट और उज़्जवल मुस्कान	30
30	अब तो झलक दिखाओ	31
31	विस्थापित	33

32	प्रश्न चिन्ह ?	34
33	हाय! सीता बहुत रोई होगी	35
34	बहुमूल्य कमीज़	38
35	भाव	40
36	लोग	41
37	भूखी हूँ कुछ खाने को दो	42
38	आशा	44
39	स्वप्न	45
40	यक्ष उवाच	47
41	बिखरे लम्हें	48
42	वायु तो वायु है	49
43	न बाँटों खण्डों में क्षेत्र को	50
44	नीड़	51
45	दूर क्षितिज़ से	53
46	तू ही तू	55
47	रेत के महल	57
48	आई बसंत	58
49	जब बूँदे धरती पर पड़ती	60
50	अनसुनी रह ही गई	61
51	परिणाम युद्ध के	62
52	मानवता को जो यूँ निगले, वो दानवता कैसी है!	63
53	नरेन्द्र मोदी नाम हैं	66
54	कलम की स्याही	68
55	एक कदम	69
56	केदारनाथ त्रासदी	71
57	चमकेगा भाल हिमाला	73
58	चिड़िया	74
59	ठुमकी चली रे	75
60	कहाँ से मैं लाऊँ ?	76
61	वीरों को रूलाया जाता है!	77
62	ये गोली	78
63	एक देश के सिपाही की व्यथा	80
64	नव दिवस	82
65	आओ आकर स्वर्ग बना दो	83
66	नौ-दस बरस के भूखे बच्चे	84
67	अवाबील	86

68	दबी पुस्तकें	87
69	लता मंगेशकर	88
70	हम भी इंसा ही थे	89
71	मैं हूँ विहंग	91
72	नन्हे तारों	93
73	साँझ ढले घर आ जाना	94
74	हिन्दी से प्यार करो	95
75	नव लेखन	96
76	जीवित हूँ	97
77	बादल गरजे उमड़-घुमड़	98
78	इस देश की पावन धरती का हनन नहीं हम नमन करे!	100
79	हमारे भारत का सुकरात महात्मा-गाँधी	101
80	कह गये संत, गुरू और ज्ञानी	103
81	भारत माता की जय बोलो	105
82	लग गई किसकी नज़र	107
83	बच्चा	109
84	''सत्यमेव जयते'' बोलो	111
85	लाल बहादुर शास्त्री	113
86	प्यारा भारत	115
87	एक ही माँ के दो बेटे	117
88	रियो-डि-जनेरियो	119
89	नारी को नारी का दुश्मन	121
90	नर-नारी	122
91	मोको कौन सा घर	123
92	माँ	124
93	माँ तो बस माँ होती है!	125
94	ग़ज़ले - आशियाँ	126
95	शीशा-ए-जाम जब यूँ छलकने लगा	127
96	ज़िन्दगी की हकीकत	128
97	तन्हा जहाँ में आए थे	129
98	समाँ बुरा हो तो	130
99	दिल से याद किया	131
100	बंद है सब खिड़कियाँ	132
101	जीने के नाम पर	133
102	तुम किसी मुकाम	134

भाव - लहरी

लिखने का शौक बचपन से था! पिता जी शायर थे, पत्रकार थे! माँ भी लिखती थी! जीवन की उथल-पुथल, फिर पैसों की तंगी, विपरीत परिस्थितियाँ, परन्तु इनका लाभ मिला लेखन को, जो सत्य के और करीब लाया! हृदय के भाव, उड़ती चिड़िया, जीने को जूझते आम आदमी, प्रकृति सब देखते हुये प्रभावित होते रहे!

बेसहारा इंसान कितना मज़बूत होता है! अनेक आशाओं को, पलते सपनों को, अंत तक पाने की लालसा, सब भावों को शब्दों का रूप देते-देते "भाव-लहरी" बन गई.....! यही पहचान है मेरी - मेरे शब्द!

लेखक से सम्पर्क हेतु:
vijaylakshmi06@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-27-2
9 788119 927272